B.A-II - Paper-3rd

01

Q1) सेतुबन्ध महाकाव्य में सीता का चरित्र का वर्णन कीजिए।

Ans. सेतुबन्ध महाकाव्य के महान नायक भगवान श्रीराम है नायिका सीता जी है सम्पूर्ण (सेतुबन्ध तथा रावण-वध की प्रमुख घटनाओं का केन्द्र सीता जी है। यद्यपि इस महाकाव्य में सीता का उल्लेख एवं इनके चरित्र का विकास अनेकबार सामने नहीं आया है, फिर भी सीता की भावना से सारा महाकाव्य अनुप्राणित है, इस का कारण यह है कि काव्य की समान्त कार्य-योजना के उत्स से सीता प्रेरणा के रूप मे विद्यमान है। सीता का चरित्र दिव्य एवं पूर्ण है। आदि कवि बाल्मीकि ने अपनी तप लेखनी के द्वारा जिस चरित्र का निर्माण किया है वह लोकवेदपंक्ति परम्परा प्रथित एवं विश्व विश्रुत हो चुका है उस चरित्र में आगे फिर विकास के किसी नये चरण को जोड़ना किसी महाकवि के लिए एक दुष्कर व्यापार है बाल्मीकि के बाद समय राम-साहित्य मे भगवान श्रीराम एवं सीता जी के दिव्य चरित्र का विकास इसलिए अधिक नही हो सका है।

प्रवरसेन के इस सेतुबन्ध के समस्त कार्य-व्यापारों के केन्द्र में सीता जीव विद्यमान है फिर भी सीता जी का चरित्र विकास कहीं अधिक नहीं हो पाया है।

सेतुबन्ध के प्रथम सर्ग मे हमें सर्व प्रथम सीता के दर्शन होते है। वहीं अशोक वाटिका में

Scanned with CamScanner

बन्दिनी जनक-नन्दनी की विरह-वेदना तथा उनके मलिन स्वरूप की कल्पना हमारे सामने साकार हो जाती है। हनुमान ने चिन्ता के कारण मलिनाय विरहिणी सीता के वेणी-बन्धना में गुथी होने के कारण मलाना सीता-वियोग के शोक से व्याकुल तथा दुरधुते थाग करने के कारण स्वेद और वर्णन्त से निसहाय सी हाथ पर स्थित उन मणि की राख के समान प्रस्तुत किया है। अशोक वाटिका में सीता की विरह-व्यवस्था से पूर्ण स्वरूप का चरित्र आदि कवि बाल्मीकि के जिन सीता वह उपवास करने के कारण अत्यन्त दुर्बल और दीन दिखायी देती थी तथा बारबार सिसक रही थी

प्रवरसेन ने सीता का चित्रण एक साधारण स्त्री के जैसा किया है। लंका दुर्ग पर वानरी सेना के कोलाहल को सुनकर अपने प्रियतम के सामीप्य का अनुभव करती है सीता के बनावट तेन के लकर सुन कर राम के यह-आजाता है। और वह मिलने के लिए व्याकुल हो जाती है। अंतराल एवं लंका पति रावण से युद्ध होता है जिस में लंका पति रावण को मृत्यु हो जाती है और राम विजय हो जाते है। तब सीता को अपने साथ लेकर श्रीराम अयोध्या नगर में प्रयान कर जाते है यह सीता का चरित्र चित्रण बहुत मोहनी रहा है।